रुद्राष्टाध्यायी में नमक-चमक का पाठ कैसे करें

रुद्राष्टाध्यायी का एक पाठ तो साधारण होता है। जो प्रथम अध्याय से आठवें अध्याय तक एक बार में कर लिया जाता है।

दूसरी प्रकार का पाठ सांगोपांग सम्पूर्ण लम्बी विधि से किया जाता है। जिसे नमक-चमक कहते है। इस विधि में ५वें अध्याय का ११ बार पाठ होता है। इस प्रकार के रुद्राभिषेक में ही एक रुद्री पाठ में ४ घण्टे तक का समय लगता है। इसकी विधि निम्नानुसार है।

सर्वप्रथम रुद्राष्टाध्यायी पहले अध्याय से प्रारम्भ कर सात अध्याय पूर्ण कर लें। फिर आठवें अध्याय को निम्नानुसार पूर्ण करें।

(१) आठवें अध्याय के प्रथम ४ श्लोक पढ़कर फिर ५वां अध्याय पूरा पढ़े। फिर

(२) आठवें अध्याय के ५वें मन्त्र से ८वें मन्त्र तक पढ़कर फिर ५वां अध्याय पूरा पढ़ें।

(३) फिर ९वें मन्त्र से १२वें मन्त्र तक पढ़कर फिर इसी क्रम से ५वां अध्याय पूरा पढ़ें।

(४) तथा १३वें मन्त्र से १५वें मन्त्र तक पढ़कर फिर ५वां अध्याय पूरा पढ़ें।

(५) और आठवें अध्याय के १६वें मन्त्र से १८वें मन्त्र तक पढ़कर फिर ५वां अध्याय पूरा पढ़ें। तथा-

(६) आठवें अध्याय के १९वें मन्त्र से २१वें मन्त्र तक पढ़कर पुनः ५वां अध्याय पूरा पढ़ें।

(७) और आठवें अध्याय के २२वें मन्त्र से २३वें मन्त्र तक पढ़कर फिर ५वां अध्याय पूरा पढ़ें। तथा

(८) आठवें अध्याय का २४वां मन्त्र पढ़कर पुनः पांचवां अध्याय पूरा पढ़ें।

(९) आठवें अध्याय के २५वां मन्त्र पढ़कर पांचवां अध्याय पूरा पढ़ें। तथा

(१०) आठवें अध्याय के २६वें मन्त्र से २७वें मन्त्र तक पढ़कर फिर ५वां अध्याय पूरा पढ़ें।

इसके बाद आठवें अध्याय का २८वां व २९वां मन्त्र पढ़कर इसी के आगे क्रम में ही पाठ पूरा करें।

आपको प्रत्येक रुद्री पाठ में आठवें अध्याय में ४, ८, १२, १५, १८, २१, २३, २४, २५ एवं २७वें श्लोक के बाद नमस्ते लिखकर बिन्दी होगी। इसका तात्पर्य है कि इस श्लोक के बाद ५वें अध्याय की पुनरावृत्ति करें।

रुद्राष्टाध्यायी उच्चारण में ध्यान देने योग्य आवश्यक बातें

वेद में ष को ख एवं य को ज बोलते है। अतः जहाँ-जहाँ भी अग्रलिखित रुद्री में ष आवे जैसे पूषा तो इसको पूखा बोलना है इसी प्रकार य को ज अर्थात् यज्ञेन कल्पन्ताम् को जज्ञेन कल्पन्ताम् उच्चारण करें। इसके अतिरिक्त जिस शब्द के आगे विसर्ग (:) हो तो उसका लम्बे स्वर में उच्चारण करें। इस प्रकार जहां-जहां ँ चिन्ह हो उसे 'गूम्' उच्चारण करेंगे। इसी प्रकार दूसरे अध्याय के तेरहवें श्लोक में लोकाॅ २ लिखा है यहाँ '२' का आशय है शब्द को लम्बे स्वर में लेना है।

पहले उच्चारण करें फिर प्रत्येक शब्द को विद्वान् पण्डितों की तरह उच्चारण करके धीरे-धीरे सानन्द रुद्राभिषेक करें। उच्चारण-श्रवण कर लय के साथ पाठ करते रहें। केवल एक श्रावण मास में ही आप सस्वर सही पाठ करना सीख सकते हैं।

शुक्लयजुर्वेदीयषडङ्गरुद्राष्टाध्यायी प्रारम्भयते।

।। श्री गणेशाय नमः।। संकल्पः- अद्य पूर्वोच्चारितैवंगुण-विशेषेणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममाऽऽत्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं, दीर्घायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं धर्मार्थकाम मोक्ष प्राप्त्यर्थं, सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे श्रीभवानीशङ्करदेवताप्रीत्यर्थे च रुद्रैकादशिन्यभिषेकयुक्तं सकृदावर्तनाभिषेक युक्तं वा अमुकद्रव्येण रुद्राभिषेकमहं करिष्ये। तदङ्गतया विहितान् शरीरशुद्ध्यर्थे लघुषडङ्गन्यासाँश्च करिष्ये।।

मनोजूतिरितिमन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः। बृहती छन्दः। बृहस्पतिर्देवता। हृदयन्यासे जपे विनियोगः।।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषता माज्ज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञमिमन्तनो-त्वरिष्टं य्यज्ञठ समिमन्दधातु।। व्विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामो ३म्प्रतिष्ठ।। ॐ हृदयाय नमः।। १।।

अबोध्यग्निरिति मन्त्रस्य बुध गविष्ठिरा ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। अग्निर्देवता-शिरोन्यासे जपे विनियोगः।।

ॐ अबोद्ध्यग्निः समिधा जनानाम्प्रति धेनु मिवायतीमुषासम्। यह्वाऽइवप्प्रवया मुज्जिहानाः प्प्रभानवः सिस्त्रते नाकमच्छ।। ॐ शिरसे स्वाहा।। २।।

मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दः। अग्निर्देवता। शिखान्यासे जपे विनियोगः।

ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिं पृथिव्व्या व्वैश्वा नरमृतऽआजात-मग्निम्।। कविᳬं सम्म्राज मति थिञ्जनानाम्आसन्ना पात्रञ्जनयन्त देवाः।। ॐ शिखायै वषट्।। ३।।

मर्म्माणितः इतिमन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः।। विराट् छन्दः।
मर्म्माणि देवता। कवच न्यासे जपे विनियोगः।।
ॐ मर्म्माणि तेव्वर्म्मणा च्छदयामि सोमस्त्वाराजा मृते नानुवस्ताम्।।
उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवामदन्तु।।
ॐ कवचायहुम्।। ४।।
विश्वतश्चक्षुरितिमन्त्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः।
त्रिष्टुप् छन्दः। विश्वकर्मा देवता। नेत्रन्यासे जपे विनियोगः।।
ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुत-व्विश्श्वतो मुखो व्विश्वतो
बाहुरुत व्विश्श्व तस्प्पात्।। सम्बाहुभ्यांधमति सम्पतत्रैर्द्यावा
भूमी जनयन्देव ऽएकः।। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्।। ५।।
मानस्तोक इतिमन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः। जगती छन्दः।
एकरुद्रो देवता। अस्त्र न्यासे जपे विनियोगः।।
ॐ मानस्तोके तनयेमानऽआयुषिमानो गोषुमानोऽअश्श्वेषु रीरिषः।।
मानो व्वीरान्रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।
ॐ अस्त्राय फट्।। ६।। इति लघुषडङ्गन्यासः।।
हरि ॐ।। माच्छन्दः प्प्रमाच्छन्दः प्प्रतिमा च्छन्दोऽअस्त्री वयश्छन्दः
पङ्क्तिश्छन्दऽ उष्णिक्छन्दो बृहतीच्छन्दो नुष्टुप् छन्दो व्विराट्छन्दो
गायत्री च्छन्दस्त्रिष्टुपं छन्दो। जगती च्छन्दः।। १।।
पृथिवी च्छन्दोन्तरिक्षञ्छन्दो द्यौश्छन्दः समाश्छन्दो
नक्षत्त्राणि च्छन्दो, वाक्छन्दो मनश्छन्दः कृषिश्छन्दो
हिरण्य ञ्छन्दो गौश्छन्दो जाश्छन्दो ऽश्वश्छन्दः।। २।।

न्यास

भगवान शंकर का ध्यान करें:- ॐ नमः शिवाय

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ᳪसमिमं दधातु। विश्वे देवासऽइह माद यन्तामोऽ३म्प्रतिष्ठ। ॐ हृदयाय नमः (हृदय के दाहिना हाथ लगावें)

ॐ अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रतिधेनु मिवायती मुषासम्। यह्वाऽइव प्रवया मुज्जिहानाः प्रभानवः सिश्रते नाकमच्छ। ॐ शिरसे स्वाहा (दाहिने हाथ से मस्तक स्पर्श)। ॐ मूर्द्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽआजात मग्निम्। कवि ᳪ सम्राज मतिथिं जनाना मासन्नापात्रं जनयन्त देवाः। ॐ शिखायै वषट् (चोटी के दाहिना हाथ लगावें)। ॐ मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्। उरो र्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवा मदन्तु। ॐ कवचाय हुम्। ॐ विश्व तश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्व तस्मात्। सं बाहुभ्यां धमति संपतत्रे-र्द्यावा भूमि जनयन्देवऽएकः। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ मानंस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषुमानो ऽअश्वेषुरीरिषः। मानो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हे विष्मन्तः सदमित्वा हवामहे। ॐ अस्त्राय फट्॥

ध्यानम्

ध्योयन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारु चन्द्रावतंसम्।
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशु मृगवरा भीतिहस्तं प्रसन्नम्।।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणै-र्व्याघ्रकृतिं वसानम्।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

रुद्राष्टाध्यायी प्रथम अध्याय

हरि ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम। आहम जानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। १ ।।

गायत्री त्रिष्टुब्जगत्य नुष्टुप्पङ्क्त्या सह।
बृह त्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्म्यन्तु त्वा।।२ ।।

द्विपदा-याश्चतुष्पदा स्त्रिपदा याश्च-षट्पदाः।
विच्छन्दा याश्च सच्छन्दाः सूचीभिः शम्म्यन्तुत्वा।। ३।।

सहस्तोमाः सहच्छन्दसऽआवृतः सहप्रमाऽऋषयः सप्त दैव्याः।
पूर्वेषां पन्थामनुदृश्य धीरा अन्वालेभिरे रथ्यो न रश्मीन्।। ४।।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदुसुप्तस्य तथैवेति।
दूरङ्गम-ज्ज्योतिषाम् ज्योतिरेकम् तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।५।।

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषुधीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानान्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। ६।।

यत्प्रज्ञानमुतचेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिव सङ्कल्पमस्तु।।७।।

येनेदम् भूतम् भुवनम् भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्त होता तन्मे मनः शिव सङ्कल्पमस्तु।।८।।

यस्मिन्नृचः साम यजूँ षि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथना
भाविवाराः।
यस्मिश्चित्त ँ सर्वमोतम् प्रजानां तन्मे मनः
शिवसंङ्कल्पमस्तु।। ९।।

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयते ऽभीशुभिर्वाजिन ऽइव।
हृत्प्रतिष्ठम् यदजिरम् जविष्ठन्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। १०।।

द्वितीय अध्याय

हरि ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमि ँ सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठ द्दशाङ्गुलम्।। १।।

पुरुषऽ्वेद ँ सर्वं यद्भूतम् यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति।। २।।

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतम् दिवि।। ३।।

त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहा-भवत् पुनः।
ततो विष्वङ्व्यक्रामत्सा शनानंशनेऽअभि।। ४।।

ततो विराडजायत विराजोऽअधिपूरुषः।
स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः।। ५।।

तस्मा द्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम् पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या-नारण्या ग्ग्राम्याश्च ये ।। ६ ।।

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ऽँसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद जायत।। ७ ।।

तस्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्मा-ज्जाताऽअजावयः ।। ८ ।।

तं यज्ञम् बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवाऽअयजन्त साध्या ऽऋषयश्च ये।। ९ ।।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादाऽउच्येते।। १० ।।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ऽँ शूद्रो अजायत।। ११ ।।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।। १२ ।।

नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्याम् भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन् ।।१३।।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासी दाज्यम् ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।१४।।

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञंतन्वाना ऽअबध्नन् पुरुषम् पशुम्।।१५।।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकम् महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति
देवाः।। १६।।

अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त ताग्रे।
तस्य त्वष्टा विदध द्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजान मग्रे।।१७।।

वेदाहमेतम् पुरुषम् महान्त-मादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।१८।।

प्रजापतिश्चरति गर्भेऽअन्तर जायमानो बहुधा विजायते।
तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन् हतस्थु भुवनानि विश्वा।।१९।।

यो देवेभ्यऽआतपति यो देवानाम् पुरोहितः।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये।। २०।।

रूचम् ब्राह्मञ्जनयन्तो देवाऽअग्रे तदब्रुवन्।
यस्त्वैवम् ब्राह्मणो विद्या तस्य देवा असन् वशे।। २१।।

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि
रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणा मुमऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।। २२।।

तृतीय अध्याय

हरि ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः
क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
संक्रन्दनो निमिषऽएक वीरः शत ँ सेनाऽअजयत्
साकमिन्द्रः।। १।।

संक्रन्द्रनेना निमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्य वनेन धृष्णुना।
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वम् युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा।। २।।

सऽइषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्वशी स ꣳस्त्रष्टा सयुध ऽइन्द्रो गणेन।
स ꣳ सृष्टजित्सोमपा बाहु शर्ध्युग्र धन्वा प्रति हिताभिरस्ता।। ३।।

बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्राँ २ऽपबाधमानः।
प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणोयुधा जयन्नस्माक मेध्यविता रथानाम्।। ४।।

बलविज्ञाय स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान ऽउग्रः।
अभिवीरो ऽअभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमातिष्ठ गोवित्।। ५।।

गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुम् जयन्तमज्म प्रमृणन्त मोजसा।
इम ꣳ सजाताऽअनुवीर यध्वमिन्द्र ꣳ सखायो
अनुसꣳरभध्वम्।। ६।।

अभि गोत्राणि सहसा गाहमानो दयोवीरः शतमन्युरिन्द्रः।
दुश्च्यवनः पृतनाषाड युध्योस्माक ꣳ सेना ऽअवतु प्रयुत्सु।। ७।।

इन्द्र आसां नेता बृहस्पति-र्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः।
देव सेनानामभि-भञ्जतीनाम् जयन्तीनाम् मरूतो यन्त्वग्रम्।। ८।।

इन्द्रस्य वृष्णो वरूणस्य राज्ञऽआदित्यानाम् मरूता ꣳ शर्द्ध
ऽ उग्ग्रम्। महामनसाम् भुवनच्यवानाम् घोषो देवानाम्
जयता मुदस्थात्।। ९।।

उद्धर्षय मघवन्ना युधान्युत्सत्वनाम् मामकानाम् मना ॅ सि।
उद्वृत्रहन् वाजिनाम् वाजिना न्युद्रथानाम् जयताँ यन्तु
घोषाः।। १०।।

अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकम् या ऽइषवस्ता
जयन्तु। अस्माकम् वीराऽउत्तरे भवन्त्व स्माँ २ ऽ
उदेवाऽ अवता हवेषु।। ११।।

अमीषाम् चित्तम् प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि।
अभि प्रेहि निर्द्दह हृत्सु शोकै रन्धेना मित्रास्तमसा सचन्ताम्।। १२।।

अवसृष्टा परापत शरव्ये ब्रह्म स ॅ शिते।
गच्छामित्रान् प्रपद्यस्व मामीषाम् कंचनोच्छिषः।।१३।।

प्रेता जयता नरऽइन्द्रो वः शर्म यच्छतु।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ।। १४।।

असौ या सेना मरुतः परेषामभ्यैति न ऽओजसा स्पर्धमाना।
तां गूहत तमसा पव्रतेन यथामीऽअन्यो ऽअन्यन्नजानन्।। १५।।

यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽइव।
तन्न ऽइन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म्मयच्छतु विश्वाहा शर्म्म यच्छतु।। १६।।

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृतेनानु वस्ताम्।
उरोर्वरीयो वरूणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वाऽनु देवा मदन्तु।।१७।।

चतुर्थ अध्याय

हरिॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वा युर्दधद्यज्ञपता वविहुत्तम।
वात जूतो योऽअभिरक्षतित्वमना प्रजाः पुपोष पुरूधा विराजति।। १।।

उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।। २।।

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ२ऽअनु। त्वं वरूण पश्यसि।।३।।

दैव्या वध्वर्यू ऽआ गत ᳪ रथेन सूर्य त्वचा। मध्वा यज्ञ ᳪ समञ्जाथे। तं प्रत्क्नथाऽअयं वेनश्चित्रं देवानाम्।। ४।।

तं प्रत्क्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषद ᳪ स्वर्विदम्।
प्रतीचीनं वृजनं दोहसे धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु वर्द्धसे।। ५।।

अयं वेनश्चोदयत्पृश्नि गर्भा ज्योतिर्जरायू रजसोविमाने।
इमम पाꣳसङ्गमे सूर्यस्य शिशुं न विप्रा मतिभी रिहन्ति।। ६।।

चित्रम् देवाना मुदगादनीकम् चक्षुर्मित्रस्य वरूणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावा पृथिवीऽअन्तरिक्ष ꣳ सूर्यऽआत्मा
जगतस्तस्थुषश्च।। ७।।

आनऽइडाभि र्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देवऽएतु।
अपियथा युवानो मत्सथा नो विश्वम् जगदभि पित्वे मनीषा।। ८।।

यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगाऽअभि सूर्य। सर्वन्तदिन्द्र ते वशे।। ९।।

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमाभासि
रोचनम्।। १०।।

तत्सूर्यस्य देवत्वम् तन्नमहित्वम् मध्याकर्तो र्विततꣳसंजभार।
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादा द्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै।। ११।।

तन्मित्रस्य वरूणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरूपस्थे।
अनन्तमन्य द्रुशदस्य पाजः कृष्णामन्य द्धरितः सं भरन्ति।। १२।।

बण्महाँ२।। ऽअसि सूर्य बडादित्य महाँ२।। ऽअसि।
महस्ते सतो महिमा पनस्यतेद्धा देव महाँऽअसि।। १३।।

बट् सूर्य श्रवसा महाँ २।। ऽअसि सत्रा देव महाँ २।। ऽअसि।
मन्हादेवानाम् सुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम्।। १४।।

श्रायन्त इव सूर्य विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत।
वसूनि जातेजनमानऽओजसा प्रतिभागन्न दीधिम।। १५।।

अद्या देवाऽउदिता सूर्यस्य निर ँ हसः पिपृता निरवद्यात्।
तन्नो मित्रो वरूणो माम हन्तामदितिः सिन्धुः
पृथिवीऽउत द्यौः।। १६।।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न-मृतं मृत्यं च।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।। १७।।

पंचम अध्याय

हरिॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो तऽइषवे नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः।। १।।

या ते रूद्रशिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।। २।।

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरू माहि ᳪ सीः पुरूषम् जगत्।। ३।।

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जग दयक्ष्म ᳪ सुमना असत्।। ४।।

अध्यवोच दधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक्।।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव।।५।।

असौ यस्ताम्रोऽअरूण ऽउत ब्रभुः सुमङ्गलः।
ये चैन ᳪ रूद्रा ऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषा ᳪ हेड ईमहे।। ६।।

असौ यो ऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनङ्गोपा अदृश्रन्न दृश्रन्नु-दहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः।। ७।।

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे।
अथो येऽअस्य सत्वानो हन्तेभ्यो करन्नमः।। ८।।

प्रमुञ्च धन्वनस्त्व-मुभयो रात्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्तऽइषवः परा ता भगवो वप।। ९।।

विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ ऽउत।
अनेशन्नस्य या ऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः।। १०।।

याते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयास्मान्विश्वतस्त्वम यक्ष्मया परिभुज।। ११।।

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो यऽइषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहि-तम्।। १२।।

अवतत्य धनुष्ट्व ॐ सहस्त्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।। १३।।

नमस्तऽआयुधाया नातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।। १४।।

मानो महान्तमुत मा नोऽअर्भकम्मानऽउक्षन्तमुत मानऽउक्षितम्।
मा नो वधीः पितरम् मोत मातरम् मा नः प्रियास्तन्वो
रुद्र रीरिषः।। १५।।

मानस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषुमानोऽअश्वेषु रीरिषः।
मानो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हं विष्मन्तः सदमित्वा
हवामहे।।१६।।

नमो हिरण्य बाहवे सेनान्ये दिशाञ्च पतये नमो।
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो।।
नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो।
नमो हरिकेशायो पवीतिने पुष्टानां पतये नमो।। १७।।

नमो बभ्लुशाय व्याधिनेऽन्नानाम् पतये नमो।
नमो भवस्य हेत्यै जगताम् पतये नमो।
नमो रूद्राया-ततायिने क्षेत्राणां पतये नमो।
नमः सूताया हन्त्यै वनानाम् पतये नमो।। १८।।

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणाम् पतये नमो।
नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनाम् पतये नमो।
नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो।
नम ऽउच्चैर्घोषाया क्रन्दयते पत्तीनां पतये नमो।। १९।।

नमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनाम् पतये नमो।
नमः सहमानाय निव्याधिन ऽआव्याधिनीनाम् पतये नमो।
नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम् पतये नमो।
नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमो।। २०।।

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो।
नमो निषङ्गिण ऽइषुधिमते तस्कराणां पतये नमो।
नमः सृकायिभ्यो जिघा ꣳ सद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो।
नमो सिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः।। २१।।

नम ऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो।
नमऽइषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो।
नम ऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो।।
नम ऽआयच्छद्भ्यो ऽस्यद्भ्यश्च वो नमो।। २२।।

नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो।
नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो।
नमः शयानेभ्य ऽआसीनेभ्यश्च वो नमो।
नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमो।। २३।।

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो।
नमोऽश्वेभ्यो ऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो।
नम ऽआव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो।
नम ऽउगणाभ्यस्तृ ँ हतीभ्यश्च वो नमो।। २४।।

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो। नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो। नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो। नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो।। २५।।

नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो। नमो रथिभ्यो ऽअरथेभ्यश्च वो नमो। नमः क्षतृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो। नमो महद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्च वो नमः।।२६।।

नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो।
नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो।
नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो।
नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमो।। २ ।

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रूद्राय च। नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च।। २८।।

नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्त्राक्षाय च शतधन्वने च। नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च।। २९।।

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च। नमो वृद्धाय च सवृधे च नमो ऽग्र्याय च प्रथमाय च।। ३०।।

नम ऽआशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नम ऽऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च।। ३१।।

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च। नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च ।। ३२।।

नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः। श्लोक्याय चावसान्याय च नम ऽउर्वर्याय च खल्याय च।। ३३।।

नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय
च। नमऽ आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय
चावभेदिने च।। ३४।।

नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः।
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च।। ३५।।

नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च।
नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने
च।।३६।।

नमः स्नुत्याय च पथ्याय च नमः काट्यायच नीप्याय च।
नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय
च।। ३७।।

नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीध्र्याय चातप्याय च।
नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय
च।। ३८।।

नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय
च। नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय
चारूणाय च।। ३९।।

नमः शङ्गवे च पशुपतये च नमऽउग्राय च भीमाय च। नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो, हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय।। ४०।।

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च, नमः शङ्कराय च मयस्कराय च। नमः शिवाय च, शिवतराय च।। ४१।।

नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च। नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च।। ४२।।

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः कि ँ शिलाय च क्षयणाय च। नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नमऽइरिण्याय च प्रपथ्याय च।। ४३।।

नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च। नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च ।। ४४।।

नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पा ँ सव्याय च रजस्याय। च नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऽऊर्व्याय च सूर्व्याय च।। ४५।।

नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम उद्गुरमाणाय
चाभिघ्नते च नमः ऽआखिदते च प्रखिदते च नम
इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो। नमो वः किरिकेभ्यो
देवाना ᳪं हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो
विक्षिणत्केभ्यो नमऽआनिर्हतेभ्यः।। ४६।।

द्रापे ऽअन्ध सस्पते दरिद्र नील लोहित।
आसाम् प्रजानामेषाम् पशूनाम्मा-भेर्मा रोङ् मोचनः
किं च नाममत्।। ४७।।

इमा रुद्राय तवसे कपर्द्दिने क्षय द्वीराय प्रभरामहे मतीः।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वम् पुष्टम् ग्रामे
ऽअस्मिन्ननातुरम्।। ४८।।

या ते रूद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी।
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे।। ४९।।

परि नो रूद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परित्वेषस्य दुर्मतिरघायोः।
अवस्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीड्ढ्वस्तोकाय तनयाय
मृड।। ५०।।

मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष ऽआयुधन्निधाय कृतिं वसान ऽआचर पिनाकम्बिभ्रदा गहि।। ५१।।

विकिरिद्र विलोहित नमस्तेऽअस्तु भगवः।
यास्ते सहस्र ँ हेतयो ऽन्यमस्मन्नि वपन्तु ताः।।५२।।

सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखाकृधि।।५३।।

असंख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽअधि भूम्याम्।
तेषा ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।५४।।

अस्मिन्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽअधि।
तेषा ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।५५।।

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिव ँ रुद्राऽउपश्रिताः।
तेषा ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।५६।।

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽअधः क्षमाचराः।
तेषा ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।५७।।

ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः।
तेषा ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।५८।।

ये भूतानामधिपतयो विशिखास: कपर्दिन:।
तेषा ँ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। ५९।।

ये पथां पथिरक्षयऽऐलवृदा ऽआयुर्युधः।
तेषा ँ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। ६०।।

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिण:।
तेषा ँ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। ६१।।

येन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्।
तेषा ँ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। ६२।।

यऽ एतावन्तश्च भूया ँ सश्च दिशो रूद्रा वितस्थिरे।
तेषा ँ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। ६३।।

नमोस्तु रूद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषव:।
तेभ्यो दश प्राची र्दशदक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीची-र्दशोदृर्ध्वा:।
तेभ्यो नमो अस्तु ते नो वन्तु ते नो मृडयन्तु ते यम् द्विष्मो यश्च
नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्म:।। ६४।।

नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये ऽन्तरिक्षे येषां वात ऽइषवः।
तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीची
र्दशोदूर्ध्वाः। तेभ्यो नमोअस्तु ते नो वन्तु ते नो मृडयन्तु ते
यम् द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाम् जम्भे दध्मः।। ६५।।

नमोस्तु रूद्रेभ्यो ये पृथिव्याम् येषामन्नमिषवः। तेभ्यो
दश प्राचीर्दश-दक्षिणा दश प्रतीची-र्दशोदीची-र्दशोदूर्ध्वाः।
तेभ्यो नमो ऽअस्तु ते नो वन्तु ते नो मृडयन्तु ते यम्
द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाम् जम्भे दध्मः।। ६६।।

षष्ठ अध्याय

एष ते रूद्र भागः सहस्वस्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहा
एष ते रुद्र भागऽआखुस्ते पशुः ।। १।।

अव रूद्रमदी महयव देवं त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्य
सस्करद्यथानः श्रेयस्करद्यथा नो व्यवसाययात्।। २।।

नमस्ते रूद्र मन्यव ऽउतो तऽ इषवे नमः। बाहुभ्यामुत
ते नमः।। ३।।

या ते रूद्र शिवा तनूरघोराऽ पापकाशिनी।
तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।। ४।।

न तं विदाथ यऽइमा जजानान्य द्युष्माकमन्तरं बभूव।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप ऽउक्थ शासश्चरन्ति।। ५।।

विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट देवऽ आदिद् गन्धर्वोऽअभवद् द्वितीयः। तृतीयः पिता जनितौषधीनामपां गर्भं व्यदधात्पुरुत्रा।। ६।।

मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव।
परमे वृक्षऽ आयुधन्निधाय कृत्तिं वसान ऽ आचर पिनाकम्बि भ्रदागहि ।। ७।।

विकिरिद्र विलोहित नमस्तेऽअस्तु भगवः।
यास्ते सहस्र ᳪ हेतयोऽन्यमस्मन्नि वपन्तु ताः ।। ८।।

सहस्राणि सहस्रशो ब्राह्वोस्तव हेतयः।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि।। ९।।

असंख्याता सहस्राणि ये रूद्राऽअधि भूम्याम्।
तेषा ᳪ सहस्र योजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। १०।।

वय ँ सोम व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः।
प्रजावन्तः सचेमहि।। ११।।

एष ते रूद्र भागः सहस्व स्त्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहा।
एष ते रूद्र भाग ऽ आखुस्ते पशुः।। १२।।

अव रूद्र मदी महव देवं त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्य
सस्करद्यथा नः श्रेय सस्करद्यथा नो व्यवसाययात्।। १३।।

भेषजमसि भेषजं गवे ऽश्वाय पुरुषाय भेषजं। सुखं
मेखाय मेष्यै।। १४।।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।१५।।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।। १६।।

एतत्ते रूद्रावसन्तेन परो मूजवतोऽतीहि।
अवतत-धन्वा पिनाकावसः कृत्ति वासा
ऽअहिंँसन्नः शिवो ऽतीहि।। १७।।

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्।। १८।।

शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तु मा माहि ँ सीः। निवर्त्त यार्म्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय।। १९।।

सप्तम अध्याय

हरिॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च।
सासह्वाँ श्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा।। १।।

अग्नि ँ हृदये नाशनि ँ हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्न हृदयेन भवं यक्ना। शर्वं मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रम् देवम् वनिष्ठुना वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम्।। २।।

उग्रँ लोहितेन मित्र ँ सौव्रत्येन रुद्रम् दौर्व्रत्ये-नेन्द्रं प्रक्रीडेन मरूतोबलेन साध्यान् प्रमुदा। भवस्यकण्ठ्य

ॐ रूद्रस्यान्तः। पार्श्व्ये महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्।। ३।।

लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा, त्वचे स्वाहा त्वचेस्वाहा। लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा, मेदोभ्यः स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा। मा ॐ सेभ्यः स्वाहा मा ॐ सेभ्यः स्वाहा, स्नावभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा अस्थभ्यः स्वाहा अस्थभ्यः स्वाहा। मज्जभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा।। ४।।

आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संयासाय स्वाहा वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा। शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा।। ५।।

तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा। घर्माय स्वाहा निष्कृत्यै स्वाहा प्रायश्चित्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा।। ६।।

यमाय स्वाहा अन्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा। ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा द्यावा-पृथिवीभ्या ॐ स्वाहा।। ७।।

अष्टम अध्याय

हरिॐ वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। १।।

प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तम् चमऽआधीतं च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। २।।

ओजश्च मे सहश्च म ऽआत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मे ऽङ्गानि च मे ऽस्थीनि च मे परूँ षि च मे शरीराणि च मऽआयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ३।।

ज्यैष्ठ्यञ्च मऽआधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मे ऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे वृद्धम् च मे वृद्धिश्च च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ४।। (नमस्ते.)

सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्चमे धनं च मे विश्वं च मे
महश्च मे क्रीडाच मे मोदश्चमे जातं च मे जनिष्यमाणं च
मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ५।।

ऋतं च मे ऽमृतं च मे ऽयक्ष्मं च मे नामयच्च मे जीवातुश्च
मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्र च मे ऽभयं च मे सुखं च मे शयनं
च मे सूषाश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ६।।

यन्ता च मे धर्त्ताच मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे
महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरम्
च मे लयश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ७।।

शंच मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे
सौमनसश्च मे भगश्च मे द्रविणम् च मे भद्रम् च मे श्रेयश्च
मे वसीयश्च मे यशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ८।। नमस्ते.

ऊर्कंच मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतम् च मे
मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च
मे जैत्रं च मऽऔद्भिद्यञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ९।।

रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टम् च मे पुष्टिश्च मे विभु च मे प्रभु च मे पूर्णंच मे पूर्णतरम् च मे कुयवं च मेऽक्षितं च मे ऽन्नञ्च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। १०।।

वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे सुपथ्यं च म ऽऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे, सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ११।।

व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मे ऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। १२।। (नमस्ते)

अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मे ऽयश्च मे श्यामं च मे लोहं च मे सीसं च मे त्रपुच मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। १३।।

अग्निश्च म आपश्च मे वीरुधश्च म ऽओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मेऽकृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशवऽआरण्याश्च मे वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। १४।।

वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मे ऽर्थश्च मऽएमश्च म इत्या च मे गतिश्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। १५।। (नमस्ते.)

अग्निश्च म ऽइन्द्रश्च मे सोमश्च मऽइन्द्रश्च मे सविता च म ऽइन्द्रश्च मे सरस्वती च मऽइन्द्रश्च मे पूषा च मऽइन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च मऽइन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। १६।।

मित्रश्च म ऽइन्द्रश्च मे वरूणश्च म ऽइन्द्रश्च मे धाता च म ऽइन्द्रश्च मे त्वष्टा च म ऽइन्द्रश्च मे मरूतश्च म ऽइन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा ऽइन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। १७।।

पृथिवी च मऽइन्द्रश्च मे ऽन्तरिक्षञ्च मऽइन्द्रश्च मे द्यौश्च म ऽइन्द्रश्च मे समाश्च म ऽइन्द्रश्च मे नक्षत्राणि च म ऽइन्द्रश्च मे दिशश्च म ऽइन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। १८।। (नमस्ते.)

अ ंᳬ शुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मे ऽधिपतिश्च म उपा ंᳬ शुश्च मे ऽन्तर्य्यामश्च म ऽऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रा वरूणशश्च म ऽआश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। १९।।

आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च म ऽऐन्द्राग्नश्च मे महावैश्वदेवश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे निष्केवल्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पात्नीवतश्च मे हारियोजनश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। २०।।

स्रुचश्च मे चमसाश्च मे वायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे ग्रावाणश्च मे ऽधिषवणे च मे पूतभृच्च म ऽआधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मे ऽवभृथश्च मे स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। २१।।(नमस्ते.)

अग्निश्च मे घर्मश्च मे ऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मे ऽश्वमेधश्च मे पृथिवीच मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मे ऽङ्गुलयः शक्वर्यो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। २२।।

व्रतञ्चम ऽऋतवश्च मे तपश्च मे संवत्सरश्च मे ऽहोरात्रे ऽऊर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। २३।।(नमस्ते.)

एकाच मे तिस्त्रश्च मे तिस्त्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च म ऽएकादश च म ऽएकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदशच मे पञ्चदशच मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म.ऽएक वि ँ शतिश्च म ऽएक वि ँ शतिश्च मे त्रयो वि ँ शतिश्च मे त्रयो वि ँ शतिश्च मे पञ्चवि ँ शतिश्च मे पञ्चवि ँ शतिश्च सप्तवि ँ शतिश्च मे सप्तवि ँ शतिश्च मे नववि ँ शतिश्च मे नववि ँ शतिश्चम एकत्रि ँ शच्च म ऽएकत्रि ँ शच्च मे त्रयस्त्रि ँ शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। २४।। (नमस्ते.)

चतस्त्रश्च मे ऽष्टौ च मे ऽष्टौ च मे द्वादशच मे द्वादशच मे षोडश च मे षोडश च मे वि ँ शतिश्च मे वि ँ शतिश्च मे चतुर्वि ँ शतिश्च मे चतुर्वि ँ शतिश्च मे ऽष्टावि ँ शतिश्च मे ऽष्टावि ँ शतिश्च मे द्वात्रि ँ शच्च मे द्वात्रि ँ शच्च मे षट्त्रि ँ शच्च मे षट्त्रि ँ शच्च मे चत्वारि ँ

शच्च मे चत्वारि ᳪ शच्च मे चतुश्चत्वारि ᳪशच्च मे चतुश्चत्वारि ᳪ शच्च मेऽष्टाचत्वारि ᳪ शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। २५।। (नमस्ते.)

त्र्यविश्च मे त्र्यवीच मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। २६।। (नमस्ते.)

पष्ठवाट् च मे पष्ठोही च म ऽउक्षा च मे वशा च म ऽऋषभश्च मे वेहच्च मेऽनड्वाँश्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। २७।। (गणानात्वा.)

व्वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहाऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहाऽहर्प्पतये स्वाहा ह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैन ᳪ शिनाय स्वाहा विन ᳪ शिनऽआन्त्यायनाय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहा ऽधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा। इयम् ते राणिमत्राय यन्तासि यमन ऽऊर्जे त्वा वृष्ट्यै त्वा प्रजानाम् त्वाधिपत्याय।। २८।।

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पता
ँ श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनोयज्ञेन कल्पताम्
आत्मा यज्ञेन कल्पताम् ब्रह्मायज्ञेन कल्पताम् ज्योतिर्यज्ञेन
कल्पतां ँ स्वर्यज्ञेन कल्पताम् पृष्ठम् यज्ञेन कल्पताम् यज्ञो
यज्ञेन कल्पताम्। स्तोमश्च यजुश्च ऽऋक् च साम च बृहच्च
रथन्तरञ्च। स्वर्देवाऽअगन्मामृता ऽअभूम् प्रजापतेः प्रजा
ऽअभूम् वेट् स्वाहा।। २९।।

अथ शान्ति अध्याय

हरि ॐ ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणम्प्रपद्ये
चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये। वागोजः सहौजो मयिप्राणा पानौ।। १।।

यन्मेछिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृणम् बृहस्पतिर्मे तद्दधातु।
शंन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः।। २।।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।। ३।।

कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदा वृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृत्ता।। ४।।

कस्त्वा सत्यो मदानाम्म ७ हिष्ठो मत्सदन्धसः।
दृढ़ा चिदारूजे वसु।। ५।।

अभीषुणः सखीनामविता जरितृणाम्। शतं
भवास्यूतिभिः।। ६।।

कया त्वम् न ऽऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्।
कया स्तोतृभ्य ऽआभर।। ७।।

इन्द्रो विश्वस्य राजति। शन्नो ऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।। ८।।

शन्नो मित्रः शं वरूणः शन्नो भवत्वर्यमा।
शन्न ऽइन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः।। ९।।

शन्नो वातः पवता ँ शन्नस्तपतु सूर्यः।
शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो ऽअभिवर्षतु।। १०।।

अहानि शं भवन्तु नः श ँ रात्रीः प्रतिधीयताम्। शन्न
ऽइन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न ऽइन्द्रावरूणा रात हव्या। शन्न
ऽइन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रा सोमा सुविताय शंयोः।। ११।।

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयो रभिस्त्रवन्तु नः।। १२।।

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशिनी।
यच्छा नः शर्म सप्रथाः।। १३।।

आपोहिष्ठा मयो भुवस्तानऽऊर्जे दधातन।
महेरणाय चक्षसे।। १४।।

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः।
उशतीरिव मातरः।। १५।।

तस्मा ऽअरंग माम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः।। १६।।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॅं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ॅं
शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। १७।।

दृते दृ ꣳ हमा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।। १८।।

दृते दृ ꣳ हमा ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम्।
ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम्।। १९।।

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे। अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्य ꣳ शिवो भव।। २०।।

नमस्ते ऽअस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे।
नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे।। २१।।

यतो-यतः समीहसे ततो नो अभयं कूरू।
शन्नः कुरू प्रजाभ्यो ऽभयं नः पशुभ्यः।। २२।।

सुमित्रिया न ऽआप ऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु।
यो ऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।। २३।।

तच्चक्षुर्देवहितम् पुरस्ता-च्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतम्
जीवेम शरदः, शत ७ शृणुयाम शरदः, शतम् प्रब्रवाम शरदः,
शतमदीनाः स्याम शरदः, शतं भूयश्च शरदः शतात्।। २४।।

अथ स्वस्तिमन्त्र पाठ

हरिॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः
पूषाविश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति
नो बृहस्पतिर्दधातु।। १।।

पयः पृथिव्यां पय ऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।। २।।

विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः
स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवो ऽअसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।। ३।।

अग्निर्देवता, वातो देवता, सूर्यो देवता, चन्द्रमा देवता
वसवो देवता, रूद्रा देवताऽदित्या देवता। मरूतो
देवता, विश्वेदेवा देवता, बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता,
वरूणो देवता।। ४।।

ॐ सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नाति भवे भवस्व माम् भवोद्भवाय नमः।। ५।।

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः।
कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय
नमो। बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय
नमो मनोन्मनाय नमः।। ६।।

अघोरेभ्यो ऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते ऽअस्तु रूद्ररूपेभ्यः।। ७।।

ॐ तत्पुरूषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रूद्रः प्रचोदयात्।। ८।।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो ऽअधिपति-र्ब्रह्माशिवो मे ऽअस्तु
सदाशिवोऽम्।। ९।।

ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तु मा
माहि ꣳ सीः।
निवर्त्तयाम्या-युषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय
सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय।। १०।।

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यदभद्रं तन्न आ सुव।। ११।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः
शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः
सामा शान्ति रेधि।। १२।।

ॐ सर्वेषाम् वा एष वेदाना ँ रसो यत्साम।
सर्वेषाम् एवैनमेतद् वेदाना ँ रसेनाभिषिञ्चति।। १३।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु।
सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु। अनेन रुद्राभिषेक-कर्मणा श्री
भवानी शङ्कर महारुद्रः प्रियताम् न मम।
ॐ सदाशिवार्पणमस्तु।। ॐ।।